

सोलहकारण पूजन

(पं. दानतरायजी कृत)

(अडिल्ल)

सोलह कारण भाय तीर्थकर जे भये ।
हरषे इन्द्र अपार मेरु पै ले गये ॥
पूजा करि निज धन्य लख्यो बहु चावसौं ।
हमहू षोडश कारन भावैं भावसौं ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र अवतरत
अवतरत, संवौषट्, इति आह्वाननम् ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र तिष्ठत-
तिष्ठत ठःठः, इति स्थापनम् ।

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वराः ! अत्र मम
सन्निहिताः भवत भवत वषट् इति सन्निधिकरणम् ।

(चौपाई आँचलीबद्ध)

कंचन-झारी निरमल नीर, पूजों जिनवर गुण-गम्भीर ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर-पद-पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्धि-विनयसम्पन्नता-शीलव्रतेष्वनतिचार-अभीक्ष्णज्ञानोपयोग-संवेग-
शक्तितस्त्याग-तपः साधुसमाधि-वैयावृत्यकरण-अर्हद्भक्ति-आचार्यभक्ति-बहुश्रुतभक्ति-
प्रवचनभक्ति-आवश्यकपरिहाणि-मार्गप्रभावना-प्रवचनवात्सल्येति -षोडशकारणेभ्यः
परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।

चन्दन घसौं कपूर मिलाय, पूजौं श्री जिनवर के पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः संसारताप-
विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।

तन्दुल धवल सुगन्ध अनूप, पूजौं जिनवर तिहुँ जग-भूप ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अक्षयपदप्राप्तये
अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।

फूल सुगन्ध मधुप-गुंजार, पूजौं जिनवर जग-आधार ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥
दरशविशुद्धि भावना भाय, सोलह तीर्थकर पद-पाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः कामबाण-
विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।

सदनेवज बहुविधि पकवान, पूजौं श्रीजिनवर गुणखान ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यः क्षुधारोग-
विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

दीपक-ज्योति तिमिर छयकार, पूजौं श्रीजिन केवलधार ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो मोहान्धकार-
विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।

अगर कपूरगन्ध शुभ खेय, श्री जिनवर आगे महकेय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अष्टकर्म-
विध्वंसनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।

श्रीफल आदि बहुत फलसार पूजौं जिन वांछित-दातार ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो मोक्षफलप्राप्तये
फलं निर्वपामीति स्वाहा ।

जल फल आठों दरब चढ़ाय, 'द्यानत' वरत करों मनलाय ।
परम गुरु हो, जय जय नाथ परम गुरु हो ॥दरश. ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो अनर्घ्यपदप्राप्तये
अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

जयमाला

(दोहा)

षोडश कारण गुण करै, हरै चतुरगति-वास ।

पाप-पुण्य सब नाशके, ज्ञान-भान परकाश ॥

(चौपाई)

दरशविशुद्धि धरे जो कोई, ताको आवागमन न होई ।
विनय महाधरै जो प्राणी, शिव-वनिता की सखी बखानी ॥
शील सदा दृढ़ जो नर पालै, सो औरन की आपद टालै ।
ज्ञानाभ्यास करै मनमाहीं, ताके मोह-महातम नाही ॥
जो संवेग-भाव विसतारै, सुरग-मुक्ति-पद आप निहारै ।
दान देय मन हरष विशेषै, इह भव जस पर भव सुख देखै ॥
जो तप तपै खपै अभिलाषा, चूरे करम-शिखर गुरु भाषा ।
साधुसमाधि सदा मन लावै, तिहुँ जग भोग भोगि शिव जावै ॥
निश-दिन वैयावृत्य करैया, सो निहचै भव-नीर तिरैया ।
जो अरहंत भगति मन आनै, सो जन विषय-कषाय न जानै ॥
जो आचारज-भगति करै है, सो निर्मल आचार धरै है ।
बहुश्रुतवन्त-भगति जो करई, सो नर संपूरन श्रुत धरई ॥
प्रवचन-भगति करै जो ज्ञाता, लहै ज्ञान परमानन्द-दाता ।
षट् आवश्यक काल जो साधै, सो ही रत्नत्रय आराधै ॥
धरम-प्रभाव करै जे ज्ञानी, तिन शिव-मारग रीति पिछानी ।
वत्सल अंग सदा जो ध्यावै, सो तीर्थकर पदवी पावै ॥

ॐ ह्रीं श्री दर्शनविशुद्ध्यादिषोडशकारणेभ्यः परमगुरुतीर्थकरपदप्राप्तजिनेश्वरेभ्यो जयमाला-
पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।

(दोहा)

एही सोलह भावना, सहित धरै व्रत जोय ।

देव-इन्द्र-नर-वंद्य-पद, 'द्यानत' शिव-पद होय ॥

(पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्)